ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

छिद्रं पृण। यजुर्वेद 12/54
हे साधक! अपने दोषों को दूर करो।
O aspirant! get ride of your shortcomings.

वर्ष 38, अंक 42 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 31 अगस्त, 2015 से रविवार 6 सिम्बर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

योगीराज श्री कृष्ण और आर्य समाज

-डॉ. महेश विद्यालंकार

भारत का सौभाग्य रहा है कि यहां अनेक ऋषि-मुनियों, सन्तों व महापुरुषों के जन्म हुए हैं। इसी परम्परा में भगवान् श्री कृष्ण जैसे धर्मात्मा, पुण्यात्मा, योगीराज, नीतिज्ञ, तपस्वी, त्यागी, लोकहितकारी महामानव का नाम संसार बड़ी श्रद्धा, भक्ति और पूजा भाव से लेता है। श्री कृष्ण अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संसार के प्रेरक तथा मार्गदर्शक बने। इतिहास में ऐसा विलक्षण अद्भुत क्रांतिकारी संपूर्ण कला युक्त व्यक्तित्व दुर्लभ है। हजारों वर्षों के घात-प्रतिघातों, विवादों और तूफानों को झेलते हुए वे आज भी पूजित, श्रद्धेय स्मरणीय, तथा अलौकिक महापुरुष के पद पर प्रतिष्ठित हैं। उनका जन्मदिवस भारत में ही अपितु विदेशों में भी आदर, श्रद्धा एवं भक्ति भावना से मनाया जाता है। वे भारतीय धार्मिकता व आस्तिकता के प्रतीक हैं।

आज से 5,243 वर्ष पूर्व योगीराज श्रीकृष्ण का जन्म कारवास में हुआ। जन्म से पूर्व ही मृत्यु के वारण्ट निकल गए। पराये घर में विमाता की गोद में पले। मामा को मारना पड़ा। राज्य छोड़कर भागना पड़ा। धर्म युद्ध में नाना रूप धारण करने पड़े। अपमान और कष्टों का जहर पिया। उनका सम्पूर्ण जीवन विषम परिस्थितियों, कठिनाइयों, मुसीबतों और संघर्षों का अजायब घर रहा है। न जाने क्या-क्या करना पड़ा ऐसी अवस्था में भी वे कभी निराश, हताश तथा उदास नहीं हुए। कभी चेहरे पर शिकन नहीं आने दी। कर्मयोगी बनकर सदा मानवता के कल्याण में लगे रहे। सदैव मुस्कुराते रहे। आज के भूले-भटके, निराश, हताश और साधनहीन मानव समाज को भगवान श्रीकृष्ण के जीवन का यह प्रेरक पक्ष सदा सम्भलने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहेगा। वर्तमान जगत श्रीकृष्ण के जीवन से सीखना चाहे तो बहुत कुछ सीख सकता है। दुर्भाय है कि हमने अपने महापुरुषों के जीवन चरित्रों को इतना विकृत, कलंकित और उल्टी सीधी बातों से भर दिया है कि आज उनके सत्य, यथार्थ एवं प्रेरक पक्ष का पता ही नहीं चलता है। पुराणों में वर्णित श्री कृष्ण के चरित्र व लीलाओं को तो दुनिया मान और जान रही है। महाभारत में वर्णित श्रीकृष्ण के असली स्वरूप तथा कार्यों को भी दुनिया मान और जान रही है। महाभारत में वर्णित श्रीकृष्ण के स्वरूप तथा कार्यों को लोग भूल रहे हैं। पुराणों और लोक साहित्य में श्री कृष्ण को चोर जार शिरोमणि, मक्खन चोर, लम्पट, भोगेश्वर आदि के विशेषण दिए हैं। वर्तमान टेलीविजन सीरियल, रास लीला, कृष्ण लीला और कथाओं आदि के माध्यम से भयंकर, अश्लीलता, पाखण्ड तथा अन्धविश्वास का प्रचार व प्रसार किया जा रहा है। चित्र की पूजा हो रही है, चरित्र का आदर्श छूट रहा है।

...शेष पेज 5 पर

डॉ. महेश विद्यालंकार द्वारा रचित उक्त लेख 'योगीराज श्री कृष्ण और आर्यसमाज' में श्री कृष्ण की वास्तविक झांकी प्रस्तुत की गई है जो जनमानस के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। इस लेख को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए इसकी फोटो कॉपी करवाकर अपने ईष्ट मित्रों, भाई-बंधुओं में अधिक से अधिक वितरित करें। -सम्पादक

आरक्षण की आग में जलता देश

एक दूसरे का हक मारकर समाज का उत्थान नहीं हो सकता

'मत पूछ जन्नत की हकीकत, सभी शैतान फरिश्ते बनकर बैठे है!' यह कोई राजनीति की बात नहीं है, न ही किसी राजनैतिक दल पर आरोप व हमला है। ये मात्र उस खतरनाक भविष्य का दर्पण है जिसमें देश स्पष्ट रूप से जलता दिखाई दे रहा है। पाकिस्तान कहता है कि हमारे पास 100 परमाणु बम है जो भारत को तबाह कर देंगे पर मैं कहता हूँ जब तक भारत में जातिवाद की राजनीति है या जातीय विद्वेष पैदाकर करके व धर्म को बांटकर देश में शासन करने के इच्छुक नेता हैं तब तक भारत को तबाह होने के लिये पाकिस्तान के परमाणु बमों की जरूरत नहीं है। ये तो खुद ही जातिवाद की आग में जलकर राख हो जायेगा। बहुत पहले मैने पढ़ा था कि संविधान सभा की बहस में महावीर त्यागी समेत कई नेताओं ने आरक्षण की अवधरणा का विरोध किया था। तब सरदार पटेल ने बहस में हिस्सा लेते हुए कहा था कि सिर्फ ज्यादा सहूलियत देकर अनुसूचित जाति और जनजाति को समाज की मुख्यधारा में लाना मुश्किल है। इसके लिये देश में जागृति लानी होगी। उन्होंने गुलामी का उदाहरण देते हुए तर्क रखे थे कि दास -प्रथा से छुटकारा किसी प्रकार के आरक्षण से नहीं मिला था बल्कि समाज में जागरुकता लाकर उस अमानवीय प्रथा को खत्म किया गया था। बाल विवाह के खिलाफ आर्य समाज द्वारा फैलाई गयी जाग्रति से ही यह प्रथा बंद हो पाई थी। पटेल जी का मानना था कि लोकतंत्र के मजबूत होने और जागरुकता से जातिवाद का नासूर खत्म हो सकेगा। सब जानते है कुछ प्रथाएं समाज में ऐसी थी जिनसे पूरा विश्व का समाज ग्रस्त था। जिनमें कुछ स्थानों पर तो आज भी भारतीय समाज ग्रस्त है। हालाकि धीरे-धीरे लोग समाज के मिथक तोड़कर आगे बढ़ रहे हैं किन्तु कुछ लोगों को नहीं ये भाता और समाज में जातिवाद का जहर घोल देते हैं जिससे देश और समाज की आपसी तालमेल की नसें कमजोर हो जाती हैं। मेरा मानना है जो पहले कमजोर था उसका उस समय के ताकतवर ने शोषण किया और जो आज मजबूत बनेगा वो कल के कमजोर का शोषण करेगा। इसलिये क्यों ऐसे काम किये जायें कि यह जातिगत तनाव ज्यो का त्यों बना रहे? एक दूसरे का हक मारकर समाज का उत्थान नहीं होता समाज का उत्थान शिक्षा में समानता और जाग्रति से होता है।

पटेल जी का मानना था कि लोकतंत्र के मजबूत होने और जागरुकता से जातिवाद का नासूर खत्म हो सकेगा। सब जानते है कुछ प्रथाएं समाज में ऐसी हैं जिनसे पूरे विश्व का समाज ग्रस्त है।

जिस देश का पढ़ा लिखा 23 साल का नौजवान आरक्षण की बैसाखी पाने के लिए लड़ रहा हो! गोलियां खा रहा हो, सार्वजनिक, सरकारी सम्पति में आग लगा रहा हो, उस देश के लिये सुपरपावर बनने का सपना देखना बेमानी होगा। खैर भारत में लगी आरक्षण की आग से यूरोपीय देश बड़े प्रसन्न है क्योंकि वो जानते हैं कि आरक्षण की मार से सुपर प्रतिभाएं भारत से जितना पलायन करेंगी उससे उन देशों को पावरफुल बनने में कितनी ही मदद मिलेगी । अब फैसला हमें करना है जाति के नाम पर बंटकर अपना घर जलाना है या एकजुट होकर विश्व विजय पाना है।-**राजीव चौधरी**

स्वाध्याय

सब हवियां परमात्मा को पहुंचती हैं

यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे। त्वे इद्धूयते हविः।
-ऋ. 1/26/6, साम. उ. 7/3/2
ऋषिः- आजीगर्तिः शुनः शेपः।। देवता- अग्निः।। छन्दः- गायत्री।।

शब्दार्थ- शश्वता तना-सनातन और विस्तृत हवि से **यत् चित हि देवं देवम्**-यद्यपि हम भिन्न-भिन्न देवों का यजामहे-यजन करते हैं, हविः-परन्तु वह हवि **त्वे इत्**-तुझमें ही **हूयते**-हुत होती है, तुझे ही पहुंचती है।

विनय- हे देवाधिदेव, एक देव! इस जगत् में दो प्रकार के नियम काम कर रहे हैं। एक शश्वत्-सनातन नियम हैं जो सब काल और सब देशों में सत्य हैं, सदा लागू हो रहे हैं। दूसरे वे नियम हैं जो भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में ही सत्य हैं, जो स्थानिक हैं, स्वल्पकालिक होते हैं। शश्वत् नियमों के अनुसार चलने से हे प्रभो! तुम्हारा पूजन होता है और आशश्वत्, अविस्तृत नियमों के अनुसार चलने से केवल उस-उस देव की तृप्ति होती है, उस-उस देव का यज्ञन होता है। परंतु हे प्रभो! इस परिमित अशाश्वत संसार में रहने वाले हम परिमित अशाश्वत शरीरधारी प्राणी तुम्हारा यजन भी सीधा कैसे कर सकते हैं? हम तुम्हारा यजन इन देवों द्वारा ही कर पाते हैं। फिर तुम्हारे यजन में इन देवों के यजन में भेद यह है कि हम जो यज्ञ विस्तृत और सनातन दृष्टि से (भावना से) करते हैं वह तो इन देवों द्वारा तुम्हें पहुंच जाता है और जो यज्ञ परिमित भावना से करते हैं वह इन देवों तक ही पहुंचता है। यदि हम वायु के लिए अग्निहोत्र करते हैं तो यह अग्नि व वायुदेवता का यजन है, परंतु यदि हम यही अग्निहोत्र संसार-चक्र को चलाने में अग्डभूत बनकर करते हैं तो इस अग्निहोत्र से तुम्हारा यजन होता है। यदि हम विद्या का संग्रह अपने सुख के लिए करते हैं तो यह सरस्वती देवी का यजन है, परंतु यदि हमारा यह ज्ञान तुम्हारी ही प्राप्ति के प्रयोजन से है तो यह सरस्वती देवी द्वारा तुम्हारा पूजन हैं इसी प्रकार अपनी मातृभूमि देवी का पूजन भी केवल स्वेदशोद्धार के लिए या जगत्-हित के लिए दोनों प्रकार का हो सकता है। यहां तक कि यदि हमारे अपने देह की रक्षा, हमारा नित्य का भोजन खाना भी सचमुच तुम्हारे ही लिए है तो यह दीखनेवाली देह-पूजा भी असल में तुम्हारा ही यजन है। इसलिए सब बात भाव की है, हवि के प्रकार की है। हम सनातन और विस्तृत भावना से जिस भी किसी देव का यजन करते हैं, उन सब देवों के नाम से दी हुई हमारी हवि तुम्हें ही जा पहुंचती है। तब हमारा लक्ष्य तुम्हारी ओर हो जाता है। अतएव जब हमारा एक-एक कार्य शाश्वत् दृष्टि से, सनातन नियमों के अनुसार होता है तब हमारे कर्म से जिस किसी देव की पूजा होती दीखती है, वह सब पूजा असल में तुम्हारे ही चरणों में पहुंच जाती है।

साभार-वैदिक विनय

वैदिक विनय

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

- विजय आर्य
मो. 09540040339

सम्पादकीय

आबादी बढ़ाने का जनून

हम दो हमारे दो, छोटा परिवार-सुखी परिवार, बच्चे दो ही अच्छे जैसे सरकारी और सामाजिक नारे जहां हिन्दू, जैन, सिख, इसाई, बौद्ध आदि समुदायों के लिये सामाजिक व्यवस्था में परिवार नियोजन के कारक बने वहीं मुस्लिम समुदाय के लिये ये मात्र जुमला बनकर रह गये जिसे न तो इस वर्ग ने कागजी तौर पर स्वीकार किया और न ही सामाजिक जीवन में जिस कारण देश की जनसंख्या बढ़कर सवा अरब को पार कर गयी और मुस्लिम आबादी बढ़कर भारत में दूसरे नम्बर पर आ गयी। इनकी बढ़ती हुई आबादी के कारण अशिक्षा, खुदा की देन, अपने धर्म का वास्ता जितने बच्चे उतना धन यानी कमाई के अधिक हाथ होंगे कहते रहे। जिस प्रकार गरीबी हमेशा शिक्षित होने में बाधक रही है उसी प्रकार इस्लाम परिवार नियोजन के खिलाफ रहा। जिस कारण अशिक्षा और धर्मान्धता के बोझ तले दबा मुस्लिम वर्ग आबादी बढ़ाने में मशगूल हो गया।

इस समय भारत की जनसंख्या विश्व की कुल जनसंख्या की 16.7 प्रतिशत है जबकि भारत का क्षेत्रफल विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिशत है। अब यदि भारत की आबादी को आंकड़ों के आधार पर देखें तो समाचार पत्रों के माध्यम से बेहद चौंकाने वाले आंकड़े सामने आये सन् 2001 में कुल आबादी में जहां हिन्दू 80.45 प्रतिशत थे वहीं 2011 में घटकर 79.8 प्रतिशत रह गये। देश में हिन्दुओं की संख्या के साथ सिख समुदाय की हिस्सेदारी भी 1.9 से घटकर 1.7 रह गयी। वर्ष 2011 की जनगणना के जारी धार्मिक आंकड़े में असम अकेला ऐसा राज्य है जहां मुस्लिम आबादी में भारी इजाफा हुआ है राज्य के कुल 27 जिलों में से नौ जिले मुस्लिम बाहुल हो गये इसी प्रकार बंगाल के कई जिलों में मुस्लिम आबादी 50 से बढ़कर 74 प्रतिशत तक हो गयी आप लोगों को ज्ञात रहे यह सब आंकड़ें 2011 के हैं यदि 2015 को देखें तो स्थिति आप समझ सकते हैं। आंकड़ों के हिसाब से बिहार मुस्लिमों का बड़ा अखाड़ा बनने जा रहा है जहां इनकी आबादी एक करोड़ 37 लाख से बढ़कर पौने दो करोड़ हो गयी। इसके बाद देखें तो देश की कुल आबादी में मुस्लिमो की संख्या 17 से 18 प्रतिशत बता रहे हैं, जबकि अकेले उत्तर प्रदेश में यह 19 प्रतिशत है। कुल आबादी में मुसलमानों की संख्या प्रतिशत के मामले में लक्षद्वीप, जम्मू-कश्मीर, पश्चिम बंगाल और केरल के बाद उत्तर प्रदेश का स्थान है। अब यदि ये आबादी इसी तरीके से धर्म निरपेक्ष राजनीति के एजेन्डे की छत्र छाया में पलती बढ़ती रही तो आने वाले समय में भारत सरकार और समाज के लिये बड़ा गम्भीर खतरा बनकर उभरेगी। क्योंकि प्रश्न जनसंख्या के बढ़ने तक सीमित नहीं है प्रश्न है जनसंख्या वृद्धि होने के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों पर भी और भार बढ़ जायेगा। पेयजल की उपलब्धता से लेकर स्वास्थ्य व अन्य उपयोगी वस्तुओं की कमी का सामना करना पड़ेगा। पिछली केन्द्र सरकार ने एक बयान में कहा था कि देश के संसाधनों पर पहला हक मुस्लिमों का है। हमने तब भी कहा था कि जब संसाधनों पर पहला हक दे रहे हो तो देश के प्रति जिम्मेदारियां निभाने में भी हक मानना पड़ेगा। हालांकि जनसंख्या को लेकर सरकार कोई भी आंकड़ा पेश करे पर अनुमान यह है कि इस समय यदि 2015 को ध्यान में रखकर देखा जाए तो देश में बहुसंख्यक कहलाए जाने वाला हिन्दू सात राज्यों में अल्पसंख्यक होकर रह गया है। मिजोरम और लक्ष्यद्वीप लगभग 2 प्रतिशत हिन्दू आबादी पर सिमटकर रह गये हैं, जहां भारत के हाथों से पूर्वोत्तरराज्य हिन्दू लगभग समाप्ति की ओर हो गये वहीं उत्तर भारत में भी स्थिति दयनीय है। अब यदि इसे व्यवहारिक धरातल पर परखें तो कई खतरनाक प्रश्न खड़े होते हैं। भारत के पूरे इतिहास पर मुस्लिम परिपेक्ष में पुर्नविचार किया जाए तो जो काम साढ़े आठ सौ साल तक दानवता पूर्ण, क्रूरता पूर्ण कार्यों से मुस्लिम शासक नहीं कर पाये वो काम देश के संविधान के कुछ पन्नों और धर्मनिरपेक्ष राजनैतिक दलों ने कर दिखाया। हिन्दू, बौद्ध और सिखों को अलग-अलग धर्म दर्शाकर जो आंकड़े अभी हाल में सरकार ने पेश किये हैं आप समझ सकते हैं कि नदी की धारा किस ओर बह रही है और कहां जाकर गिरेगी?

-सम्पादक

बोध कथा

करूं मैं दुश्मनी किससे?

मैं जब गृहस्थ-आश्रम में था, वर्ष में एक या दो मास के लिए किसी एकान्त स्थान में चला जाता था, अपने-आपको प्रभु के चरणों में अर्पण कर देने के लिए। अपने साथ आटा, कुछ दाल और घी, छोटा-सा बिस्तर, थोड़े से कपड़े लेकर किसी जंगल में जाकर पत्तों की कुटिया बनाता था। उसमें रहने लगता था। दिन में एक बार दो रोटियां बनाकर खा लेता था। शेष समय अपने मन में अपने प्रभु के दर्शनों का प्रयत्न करता था।

एक बार घर से तैयारी करके जिला कांगड़ा के जंगल में जा पहुंचा। हवन किया। इसके प्रश्चात् मौन धारण करके अपने कार्य में रत हो गया। मन के रोगों को देखने लगा। इन्हें दूर करने का यत्न करने लगा। परंतु एक दिन, दो दिन, तीन दिन बीत गए। चित्त को शांति नहीं मिली। मैंने दुःखी होकर भगवान से कहा- प्रभो! यह क्या बात है? तेरे द्वार पर आकर भी मेरे चित्त को शांति क्यों नहीं? दुःखी बैठा रहा। अगले दिन प्रातः पांच बजे स्नान करके फिर से भजन करने के लिए बैठा तो विचित्र बात हुई। ऐसा विदित हुआ, जैसे भीतर से एक ध्वनि पुकार रही है। स्पष्ट सीधे शब्दों में उसने कहा- *''व्यर्थ है तेरा भजन! व्यर्थ है तेरा आत्मचिन्तन! लाहौर में एक पुरुष है, उससे तू घृणा करता है। जब तक यह घृणा तेरे हृदय में रहेगी, तब तक मन को शांति नहीं मिलेगी। भजन में जी लगाना चाहता है तो जा, उससे पहले क्षमा मांग। इस घृणा को त्याग दे, जो तेरे मन में है।''*

मैंने इस ध्वनि को सुना तो अशांति का कारण जैसे सजीव होकर मेरे सामने खड़ा हो गया। उसी समय मैंने अपना बिस्तर लपेटा, घर में वापस आया तो फिर घर वाले विस्मय में थे कि यह इतना शीघ्र घर कैसे आ गया? किन्तु मैंने किसी से बात नहीं की। सामान रखा और सीधे उस सज्जन के घर गया। उनके मकान पर जाकर पुकारा। वह पुकार सुनकर बाहर आये, आश्चर्य से बोले-''आप?''

मैंने पगड़ी उतारकर उसके चरणों में रख दी, बोला- ''मैं क्षमा मांगने आया हूं। मुझे क्षमा करना होगा।''

वह आश्चर्य करने लगा कि इसे क्या हो गया? मैंने कहा- ''आश्चर्य में मत पड़ो।'' मैं जंगल में अज्ञातवास के लिए गया था। वहीं से अन्तरात्मा की अन्तर्ध्वनि हुई। मैं आत्म-चिन्तन छोड़कर सीधा यहां आ गया। आप क्षमा नहीं करेंगे, तो मेरे चित्त को शांति नहीं मिलेगी। यह सुनते ही उसकी आंखों में आंसू आ गये। अपने सीने से लगा लिया उन्होंने मुझको। वे भी रोय, मैं भी रोया, परंतु इस रोने से घृणा की अग्नि शांत हो गई। मैं वापस जंगल में गया, वहां भजन में बैठा तो चित्त में अपार आनन्द हुआ। फिर चित्त नहीं लगे, ऐसी बात नहीं हुई। कई लोग मेरे पास आते हैं, कहते है-हमारा भजन करने को जी नहीं चाहता। अरे भोले बच्चों! जी लगे किस प्रकार? तुमने स्वयं ही तो ईर्ष्या और घृणा की अग्नि दहका रखी है। बुझा दो इसे! जी अवश्य लग जायेगा।

करूं मैं दुश्मनी किससे, अगर दुश्मन भी हो अपना।
मुहब्बत ने नहीं जगह दिल में छोड़ी अदावत की।।

साभार-बोध कथाएं

प्रभु को हृदयासन पर आसीन करें

....अग्निना तप-तः अर्थात् ज्ञानाग्नि से अपने आपको दीप्त करें....साधक को चाहिए कि वेदादि आर्ष ग्रन्थों तथा मोक्ष-शास्त्रों का निरन्तर स्वाध्याय करते हुए निरन्तर सत्य-असत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करता चले...(प्रेष्ठः पुत्रः उपसि) जैसे पिता की गोद में जाते हो वैसे उस पिता की गोद में जाएं....ऐसी स्थिति तभी प्राप्त हो सकेगी जब साधक अपने को पवित्रता के साथ जोड़ता चला जायेगा तथा निरन्तर उपासना करता रहेगा। प्रभु की स्तुति, प्रार्थना और उपासना से ही हम पिता की गोद को प्राप्त कर सकते हैं अन्य कोई भी मार्ग नहीं है....

वेदादि समस्त ग्रन्थों के अनुसार परमात्मा को प्राप्त करना ही मानव-जीवन का प्रमुख लक्ष्य है। जीव जन्म-जन्मान्तरों से आनन्द एवं मुक्ति के लिए भटक रहा है। परमात्मा का सान्निध्य ही मुक्ति है तथा यही विद्या भी है। इसकी प्राप्ति के लिए हमें अपना यह रथ भीतर की ओर मोड़ना पड़ेगा। यदि अब तक हम मात्र शारीरिक भोगों की तृप्ति के लिए ही जिये हैं तो अब हमें आत्मिक स्तर पर जीना होगा। आज मानव बार-बार भोगों में डूबकर उनमें तृप्ति ढूंढ़ रहा है मगर उसे तृप्ति मिल नहीं पा रही है। उसे इस सत्य का परिचय बार-बार मिल भी रहा है कि इन भोगों में तृप्ति नहीं है मगर कितना आश्चर्य है कि वह अन्धों की तरह तृप्ति के लिए बार-बार उन्हीं भोगों की शरण में जा रहा है। भोग तो स्वयं ही पुकार कर व्यक्ति को कह रहे हैं कि हममें तुम्हें त्प्त करने की शक्ति नहीं है मगर व्यक्ति समझ नहीं रहा है। परिणाम यह होता है कि भोगों को भोगते-भोगते व्यक्ति की तृष्णा और अधिक बढ़ती जाती है। इसी तथ्य को मनु महाराज ने इस प्रकार से स्पष्ट किया है-

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति। हविषा कृष्णवत्मेव भूय ऐंवाभिवर्धते।। (मनु. 2-94)

अर्थात् यह निश्चय जानिए कि जैसे अग्नि में ईंधन और घी डालने से अग्नि की ज्वाला और अधिक बढ़ जाती है वैसे ही कामों के उपभोग से कभी भी काम शान्त नहीं होता है बल्कि निरन्तर बढ़ता ही जाता है। मनु महाराज जी की ये पंक्तियां उन लोगों के लिए कितनी बड़ी चेतावनी है जो कामनाओं की शरण में बार-बार जाकर तृप्ति पाना चाहते हैं। यही नहीं हमारे ऋषि-मुनियों और महापुरुषों ने अपने जीवन के अनुभव के आधार पर ऐसे तथ्य हमारे समक्ष रखे हैं जिन पर चिन्तन करने से हम अपनी जीवन नौका को सही दिशा में ले जाकर प्रभु प्राप्ति और मुक्ति तक पहुंच सकते हैं। भ्रतहरि जी ने कहा है-

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता, तपो न तप्तं व्यमेव तप्ताः। कालो न यातो वयमेव याताः, तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।।

अर्थात् हम सांसारिक विषयों का भोग नहीं करते हैं मगर उन भोगों को प्राप्त करने की चिन्ता ने हमें भोग लिया है। हमने तप नहीं किया बल्कि आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक तापन जीवन भर हमको ही तपाते हैं। भोगों को भोगते-भोगते हम काल को नहीं काट पाए प्रत्युत काल ने हमें ही नष्ट कर दिया। इसी प्रकार भोगों को प्राप्त करने स्वरूप तृष्णा तो बूढ़ी नहीं हुई हम ही बूढ़े हो गए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम् समुल्लास में आध्यात्मिक,आधिदैविक और आधिभौतिक दुःखों का 'त्रिताप' के रूप में वर्णन किया है और इनसे छूटने को ही मोक्ष संज्ञा दी है। सांख्यकार का कथन भी है-

अथ

त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः (1-1)

अर्थात् तीन प्रकार के दुःखों की अतिशय निवृत्ति मोक्ष है। दुःखों से छूटने का प्रभु-भक्ति के अतिरिक्त और कोई भी मार्ग नहीं है... क्योंकि बड़े से बड़ा सांसारिक सुख भी दुःखमिश्रित होता है.... उपरोक्त विवेचन से भी यह बात पूर्णतया स्पष्ट हो जाती है कि परमात्मा की प्राप्ति के बिना दुःखों से निवृत्ति नहीं हो सकती है। वेद मंत्र में भी इसी बात की घोषणा की गयी है-

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं आदित्यवर्णं तमसः परस्तात। त्मेव विदित्वाऽति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।। (यजु. 31-18)

इसका भावार्थ है कि सब मनुष्यों को उचित है कि उस परमात्मा को अवश्य जाने क्योंकि वह परमात्मा बड़ों से भी बड़ा है और उसके बराबर कोई नहीं है। आदित्यादि का रचक और प्रकाशक वही एक परमात्मा है तथा वह सदा प्रकाश स्वरूप है। वह समस्त अविद्यादि दोषों से दूर है...उसे जाने बिना परमेश्वर की भक्ति और उसके ज्ञान के मुक्ति का मार्ग कोई नहीं है। यह एक अकाट्य सिद्धान्त है तथा इसे आत्मना हृदयंगम करके चलने की आवश्यकता है। अन्य कोई मार्ग दुःखों से मुक्ति का और कोई है ही नहीं। व्यक्ति सब प्रकार के दुःखों और बार-बार के जन्म मरण आदि के चक्कर से परमात्मा को प्राप्त करके ही छूट सकता है। वेद में ही अन्यत्र प्रभु-प्राप्ति के लिए बहुत ही सुन्दर कुछ सूत्र इस प्रकार दिये हैं-

अंजन्ति यं प्रथयन्तो न विप्रा वपावन्तं नाग्निना तपन्तः। पितुर्न पुत्र उपसि प्रेष्ठ आ घर्मो अग्निमृतयन्नसादि।। (ऋ. 5-43-7)

मंत्र में कहा गया है **(अंजन्ति यम् प्रथयन्तो)** हम प्रभु के द्वारा दी हुई शक्तियों का विस्तार करें। परमात्मा ने हमें अनेक प्रकार के भौतिक पदार्थ प्रदान किये हैं। हम शारीरिक और मानसिक शक्तियों का प्रयोग प्रभु का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए ही करे. ..आगे कहा गया है कि **(विप्राः)** अपना पूर्ण करने वाले, न्यूनताओं को दूर करने वाले बनें अर्थात् प्रभु-प्राप्ति के लिए साधक को अपने समस्त अभद्रों को निरन्तर दूर करते रहना चाहिए और समस्त भद्रों को ग्रहण करते रहना चाहिए... साधक में जितनी ही भद्रता का उदय होगा उतना ही वह प्रभु के समीप से समीपतर होता जायेगा। **(अग्निना तप-तः)** ज्ञानाग्नि से अपने आपको दीप्त करें.. ..साधक को चाहिए कि वेदादि आर्ष ग्रन्थों तथा मोक्ष-शास्त्रों का निरन्तर स्वाध्याय करते हुए निरन्तर सत्य-असत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करता चले...**(प्रेष्ठः पुत्रः उपसि)** जैसे पिता की गोद में जाते हैं वैसे उस पिता की गोद में जाएं....ऐसी स्थिति तभी प्राप्त हो सकेगी जब साधक अपने को पवित्रता के साथ जोड़ता चला जायेगा तथा निरन्तर उपासना करता रहेगा। प्रभु की स्तुति, प्रार्थना और उपासना से ही हम पिता की गोद को प्राप्त कर सकते हैं अन्य कोई भी मार्ग नहीं है.. ..आगे कहा गया है कि **(धर्मः ऋतयन्)** सोम का रक्षण करते हुए यज्ञ की कामना करें अर्थात् ब्रम्हचर्य का पालन करते हुए सदा यज्ञादि परोपकार के कार्यो में लगा रहे। साधक को अपने आपको प्राणी मात्र की सेवा के लिए समर्पित करना चाहिए क्योंकि इससे भी प्रभु का सान्निध्य प्राप्त करने की पात्रता प्राप्त होती है....और फिर इस प्रकार अर्थात् उपरोक्त साधनों से (अग्निना आ असादि) उस अग्रणी प्रभु को हृदयासन पर आसीन करें।

-महात्मा चैतन्यमुनि, महर्षि दयानन्द धाम, सुन्दरनगर(हि.प्र.)

संस्कृतम्

स्त्री शिक्षाया आवश्यकता

शिक्षा मनुष्ये स्वकर्तव्याकर्तव्यस्य ज्ञानमादधाति। शिक्षयैव जनाः शुभं कर्म कुर्वन्ति, अशुभं च परित्यजन्ति। शिक्षिता एव जना देशसेवां राष्ट्ररक्षां राष्ट्रसंचालनं पठनं पाठनं विज्ञानोन्नति च कुर्वन्ति। यथा पुरुषेभ्यः शिक्षा श्रेयस्करी वर्तते, तथैव स्त्रीभ्योऽपि शिक्षाया महती आवश्यकता वर्तते।

स्त्रीणां कृते शिक्षाया महती आवश्यकता एतस्मात् कारणाद् वर्तते यत् ता एव समये प्राप्ते मातरो भवन्ति। यथा मातरो भवन्ति, तथैव सन्ततिर्भवति। यदि मातरोऽशिक्षिताः विद्याशून्याः कर्तव्यज्ञानहीनाश्च सन्ति, तर्हि पुत्राः पुत्र्यश्च तथैवाविद्याग्रस्ताः कुशलतारहिताश्च भविष्यन्ति। यदि नार्यः शिक्षिताः सन्ति, तर्हि ताः स्वपुत्राणां पालनं रक्षणं शिक्षणादिकं च सम्यक्तया करिष्यन्ति, एवं तासां सन्ततिः विद्यायुक्ता हृष्टा पुष्टा सद्गुणोपेता च भविष्यति। अतएव महानिर्वाणतन्त्रेऽप्युक्तमस्ति-

'कन्याऽप्येवं लालनीया, शिक्षणीया प्रायत्नतः'।।1।।

विवाहे संजाते कन्याः गृहस्थाश्रमं प्रविशन्ति। यदि पुरुषो विद्वान् स्त्री च विद्याशून्या भवति तर्हि तयोः दाम्पत्यजीवनं सुखकरं न भवति। विद्याया अभावात् स्त्री स्वकीयं कर्तव्यं न जानाति, अतएव बहवो रोगा व्याधयश्च तत्र स्थानं कुर्वन्ति। अतः स्त्रीणामपि शिक्षा पुत्राणां शिक्षावदेव आवश्यकी वर्तते। स्त्रियो मातृशक्तेः प्रतीकभूताः सन्ति, अतस्तासां सदा सम्मानः करणीयः। यस्मिन् देशे समाजे च स्त्रीणामादरो च स्त्रीणामादरो भवति, स देशः समाजश्चोन्नति प्राप्नुतः। उक्तं च मनुना-

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः'।।2।।

बालिकानां शिक्षा बालकैः सहैव स्यात्, पृथग् वा, इत्येष विषयः साम्प्रतं यावद् विवादास्पदमेवास्ति। स्त्रीशिक्षाया भारते प्रथमं बहुविरोधोऽभवत्। साम्प्रतं स समाप्तप्राय एव। स्त्रीशिक्षायाः काश्चन हानयोऽपि दृश्यन्ते, तासां परिमार्जनं कर्तव्यम्। शिक्षिताः स्त्रियः प्रायोऽधिकं सुकुमार्यो भवन्ति। तासां चेतो गृहकर्मसम्पादने न तथा संलग्नं भवति यथा विलासे आमोदे प्रमोदे च रमते। एतास्त्रुटयः परिमार्जनीयाः। स्त्रीणां सा शिक्षाऽद्यत्वे विशेषतो लाभप्रदा विद्यते, यथा ताः गृहकर्मप्रवीणाः कुलाग्डनाः सत्यः पतिव्रताः साध्व्यो विदुष्यो मातरश्च भवन्ति। यथा ता देशस्य समाजस्य च कल्याणसम्पादने प्रवृत्ता भवन्ति, सैव शिक्षा हितकरी वर्तते।

देशस्य समाजस्य चोन्नत्यै श्रीवृद्धये च स्त्रीशिक्षाऽत्यावश्यकी वर्तते।

नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य विद्या परिषद दिल्ली द्वारा दिनांक 27 अगस्त 2015 को आयोजित बच्चों की नुक्कट नाटक प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे गुलाबी बाग थानाध्यक्ष श्री एच.एस. मीणा ने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा, 'सभी बच्चों को सुबह उठकर अपने माता-पिता के चरण स्पर्श करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करने से आयु, विद्या, यश और बल बढ़ता है। आज के युग में बच्चों को सत्य को अपनी बुद्धि व विवेक के साथ अपनाकर अंधविश्वास व पाखंड से दूर रहना चाहिए।' श्री मीणा ने बच्चों को सदैव उत्तम कर्म करने के लिए भी बल दिया। इस अवसर पर श्री मीणा को शाल द्वारा सम्मानित किया गया व उन्हें महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया। कार्यक्रम श्री राजेन्द्र मदानजी की अध्यक्षता में लालीबाई बाल प्राईमरी स्कूल, आर्य समाज गोविन्द भवन, राम बाग के प्रांगण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ गायत्री मंत्र से हुआ। तीन वर्गों में व्यवस्थित नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अंधविश्वास व पाखंड, नैतिक शिक्षा की आवश्यकता व आर्य समाज पर आधारित विषयों पर नुक्कड़ नाटिकाएं प्रस्तुत कीं। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र, कॉमिक्स व सी.डी. दी गयीं। कार्यक्रम में श्रीमती वीणा आर्या, श्री राजेन्द्र मदान, श्री अजीत मदान, श्री प्रदीप आर्य, श्री दीपक शर्मा, श्रीमती अनीता शर्मा, श्री देवेन्द्र आर्य, श्रीमती भारती शर्मा और विभिन्न विद्यालयों की अध्यापिकाएं उपस्थित थीं। विद्यालय की ओर से इस अवसर पर अतिथियों को शाल व पुष्पों द्वारा सम्मानित किया गया। विद्यालय प्रधानाचार्य श्रीमती शशी बाला द्वारा सभी का धन्यवाद किया गया। कार्यक्रम का समापन शान्ति पाठ के साथ हुआ।

-आर्य विद्या परिषद

स्वाधीनता दिवस पर आर्य समाज वैशाली द्वारा महिलाओं को सिलाई मशीनों का वितरण

आर्य समाज वैशाली,जयपुर (राजस्थान) द्वारा गरीब परिवार की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से दिनांक 15 अगस्त 2015 को 69वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सिलाई मशीनों का वितरण किया गया। **-मोती लाल शर्मा**

स्त्री आर्य समाज सुशान्तलोक-1 गुड़गांव के तत्त्वावधान में वार्षिकोत्सव

स्त्री आर्य समाज सुशान्त लोक-1 डी ब्लॉक,गुड़गांव दिनांक 9 सितम्बर 2015 प्रात: 10.30 बजे से अपने द्वितीय वार्षिकोत्सव का आयोजन कर रहा है जिसके अन्तर्गत यज्ञ, भजन, प्रवचन सहित अनेकानेक ज्ञान वर्धक कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे। श्रीमती रीटा भटनागर की अध्यक्षता में होने वाले इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती निर्मल रहेजा (रहेजा डेवलपर्स) होंगी व विशिष्ट अतिथि प्रो. वेदवती वैदिक, डॉ. वेद प्रताप वैदिक होंगे।

निवेदक : श्रीमती गोकुलदीप मेहता, प्रधाना, मो. 09811155964, श्रीमती किरण रहेजा, मंत्राणी, मो. 09971091989

संस्कृत दिवस समारोह सोल्लास सम्पन्न

डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल सैक्टर-14 फरीदाबाद(हरियाणा) के तत्त्वावधान में दिनांक 25 अगस्त 2015 को संस्कृत दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कक्षा 6 के लगभग 40 बच्चों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम में बच्चों द्वारा वेद मंत्रों का अर्थ सहित पाठ, संस्कृत में समाचार, देश भक्ति के श्लोकों का गायन व संस्कृत विषयक ज्ञान वर्धक जानकारियां, लघु नाटिका, शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किये गये। छात्रों का उत्साह देखने योग्य था। कार्यक्रम के अन्त में संस्कृत भाषा का गुणगान करते हुए प्राचार्य श्री एस.एस. चौधरी ने इसे विश्व भाषा की गरिमा प्रदान की और छात्रों से अधिकाधिक संस्कृत सीखने की अपील की। **-हरि ओम् शास्त्री**

कविता व्यंग्य

चीन में निर्मित

कुद्रत ने कैसा खेल किया,
कुद्रत ने हम को चीन दिया।
बना निकम्मा दिया हमें,
सब हुनर हमारा छीन लिया।।

उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम,
जहां-जहां मैं देख सका।
इस दुनिया की हर शैय पर,
था चीनी ठप्पा लगा हुआ।।

सस्ते-सस्ते के चक्कर में,
अपना मस्तिष्क गंवा डाला।
भर लिया जंक से घर अपना,
घर जंकयार्ड बनवा डाला।।

कपड़े लत्ते आ गये चीन से,
खेल खिलौने भी आए।
आ गये फोन, **Nintendo** भी,
सब चीनी ठप्पा लगवाए।

अंडी-बन्डी पर छपा चीन,
चड्डी पर भी चीनी ठप्पा।
मिट गया निशा यू एस, यूरो का,
मैं खोज रहा चप्पा-चप्पा।।

जिस कुर्सी पर बैठे नेता,
उस पर भी चीनी चिन्ह लगा।
हर देश, देश के झण्डे पर,
था चीनी कपड़ा चढ़ा हुआ।।

राम कृष्ण आ गये चीन से,
बाब शिरडी से भी आए।
देख घनी बिकरी चीनी,
सब मिल बाबा के गुण गाए।।

जा पहुंचे चन्दा पर चीनी,
अपना अधिकार जताने को।
जो खोज रहे वो जन जन्तु,
अपना व्यापार बढ़ाने को।।

सम्भव है इक दिन नव शिशु भी,
सभी चीन से आएं गे,
हंसना रोना गाना चीनी में,
मिल चीनी राग सुनाएंगे।

बेच माल सस्ते में सब,
क्या चीनी ने फन्दा डाला।
बिन हथियार बिना धमकी,
सबको आधीन बना डाला।।

मैं सोच रहा असमंजस में,
जाने भविष्य कैसा होगा।
इस चीनी के बन्धन से,
कैसे आजाद जहां होगा।।
कैसे आजाद जहां होगा।।

ओ.पी.अरोड़ा एम.डी., ग्रेटर एटलांटा, अमेरिका

कविता

जीवन के जर्जर तारों को...

जीवन के जर्जर तारों को,
नव जीवन की झनकार दिया।
कैसे ये चुकेगा ऋण तेरा,
हम पर जो उपकार किया।

महर्षि ने लिखा अमर ग्रन्थ,
सत्यार्थ प्रकाश ज्ञान का भण्डार दिया।
गति विहीन जीवन की गति बन,
वेद-ऋचाओं का स्वरकार दिया।
जीवन के .....

ऋषिवर गुजरे हर परीक्षा से,
पाखंडियों की चुनौती स्वीकार किया।
खूनी तलवारों के बार झेले,
विषधर की फुफकार यहां।

जीवन के .....
कुछ शंकराचार्य और धर्मचारियों ने,
भाव भ्रमित वेद प्रचार किया।
महर्षि दयानन्द ने विरोध कर,
वेद हीनता का बन्द कुप्रचार किया।
जीवन के.....

क्या दें तुम्हें ऋषिवर इसके लिए,
हम पर उपकार प्रत्युपकार किया।
ऋषिवर तुमने वेद ज्ञान देकर,
महावीर ऋणी सारा संसार किया।
जीवन के.....

-महावीर सिंह,
नई दिल्ली-46

आर्य सन्देश यदि आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा है या आप आर्य सन्देश के लिए कोई सुझाव या शिकायत करना चाहते हैं तो हमारी ई-मेल आई डी. aryasandeshdelhi@gmail.com पर मेल करें। साथ ही आप अपनी ई-मेल आई डी. भी लिखकर भेजें जिससे आपके पास आर्य सन्देश मेल के जरिए भेजा जा सके। **-सम्पादक**

पृष्ठ 1 का शेष

योगीराज श्री कृष्ण ...

महाभारत में व्यास जी के इस कथन से श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की उच्चता तथा महानता का पता चलता है- 'कृष्ण वन्दे जगद् गुरुम्' महाभारत में यदि कोई सर्वमान्य व सर्वपूज्य थे, तो केवल भगवान श्री कृष्ण थे। उनके वास्तविक स्वरूप का पता महाभारत में चलता है। जहां उन्हें सर्वगुण सम्पन्न, राष्ट्रनायक, विश्वबन्धु, योगीराज, उपदृष्टा, नीतिनिपुण, धर्मरक्षक, मार्गदर्शक आदि विशेषण दिए हैं। महाभारत से ही गीता निकली है। गीता ने जो संसार को उच्चकोटि का व्यावहारिक जीवन-दर्शन दिया है, उसके आगे सारा संसार नतमस्तक है। गीता ज्ञान को पढ़ और सुनकर कोई यह नहीं कह सकता है कि योगीराज श्रीकृष्ण भोगेश्वर थे। वे आदर्श महापुरुष थे। उनके जीवन में धर्म, दर्शन, संस्कृति, इतिहास, काव्यकला, संगीत आदि का अद्भुत समन्वय था। उनका जीवन 'योगः कर्मसु कौशल्' का प्रत्यक्ष उदाहरण था। उन्होंने जो कार्य किया, निपुणता, सुन्दरता तथा कुशलता से किया। गायें चराई, मुरली बजाई, दोस्ती निभाई, सारथी बने, युद्ध कराया। सेवा के सभी कार्यों में अपनी पहचान तथा छाप छोड़ी। सभी कामों में वे प्रेरणा व आदर्श के उदाहरण बन गए।

योगीराज श्री कृष्ण के जीवन का उद्देश्य था-1. परित्राणय साधुनाम्-सज्जनों की रक्षा करना, 2. विनाशाय च दृस्कृताम् दुष्टों को सजा दिलाना और दलन करना, 3. धर्म संस्थापनार्थाय- धर्म की रक्षा करना। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। अपने लिए न कुछ चाहा, न मांगा और न संग्रह किया। वे चाहते तो महाभारत की विजय के पश्चात् पाण्डवों के महामंत्री बन सकते थे। मगर उस महापुरुष ने सब कुछ त्याग दिया। वर्तमान राजनीति और राजनीतिज्ञ भगवान श्री कृष्ण से सीखना चाहें तो बहुत प्रेरणा सन्देश और आदर्श ले सकते हैं। इस देश ने अपने महापुरुषों के साथ जितना अन्याय और अपमान किया है उतना और कहीं नहीं हुआ है। कैसी विचित्र विडम्बना है कि जिन्हें हम भगवान कहते हैं, उन्हीं भगवान को हम नचाते हैं, गंवाते हैं और उन्हीं के नाम पर भीख मांगते हैं। मनोरंजन करते हैं। उनकी नकल उतारते हैं। उन पर तरह-तरह के लांछन लगाते हैं। ऐसा करना अपने महापुरुषों के साथ घोर अपमान तथा अन्याय है। जिन्होंने कभी भीख नहीं मांगी थी, उन्हें हमने भिखारी बना दिया। क्या यही उनके उपकारों का बदला है? क्या यही उनके जन्म दिन मनाने की उपयोगिता, सार्थकता एवं व्यावहारिकता है? आज महापुरुषों के जन्म दिन, पर्व, कथा, प्रवचन, तीर्थ, मंदिर, राम लीलाएं, कृष्ण लीलाएं आदि धार्मिक मनोरंजन, खाने-पीने, घूमने व मौजमस्ती के अवसर बनते जा रहे हैं। मूल तेजी से छूटता जा रहा है। इन कार्यक्रमों के पीछे जो सन्देश प्रेरणा, व्रत संकल्प और सीखने का भाव था वह कहीं नजर नहीं आता है। इसी कारण आज समाज में नैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक जीवन मूल्यों में तेजी से गिरावट आ रही है। जड़-पूजा आडम्बर, ढोंग, पाखण्ड, अन्धविश्वास आदि तेजी से फैल रहे हैं। काल्पनिक चमत्कारिक और बेसिर-पैर की बातों को सतप्रवचन महाराज, बाबा वाक्यम् प्रमाणम् कह कर माने जा रहे हैं?

आर्य समाज सदा से सत्य का शोधक और सत्य का प्रचारक रहा है। आर्य समाज ने अपने महापुरुषों, महाग्रन्थों और संस्कृति की रक्षा की है। महर्षि दयानन्द ने योगीराज श्री कृष्ण के उज्जवल आदर्श एवं प्रेरक चरित्र का प्रमाण पत्र दिया है। ऐसा कोई दे नहीं सकता है-वे कहते हैं "श्री कृष्ण का गुण-कर्म-स्वभाव और चरित्र महापुरुष के सदृश है" आर्य समाज योगीराज श्री कृष्ण को महापुरुष के रूप में प्रतिष्ठित करता है। आर्य समाज मूर्ति पूजा और अवतार नहीं मानता है। वह चित्र का सम्मान और चरित्र की पूजा का सन्देश देता है। यदि हम जीवन और जगत के लिए सीखना चाहे तो महापुरुषों से कदम-कदम पर प्रेरणा-सन्देश तथा आदर्श प्राप्त कर सकते हैं। अपने जीवन का सुधार कर सकते हैं।

आज आवश्यकता है-योगीराज श्रीकृष्ण के वास्तविक स्वरूप और चरित्र को जानने तथा समझने की। इस महापुरुष के जीवन और चरित्र के साथ अनेक भ्रांतियां व विकृतियां जुड़ गई हैं। लोगों को सच्चाई व सत्य स्वरूप का बोध ही नहीं है। पूरे इतिहास में "योगीराज" की उपाधि केवल श्रीकृष्ण को ही मिली है। कैसी विचित्रता है कि हम उन्हें योगीराज के रूप में माने और पूजे जा रहे हैं? वैज्ञानिक युग में भी तर्क-प्रमाण, मुक्ति व व्यवहार से नहीं सोच पा रहे हैं? उनके असली जीवन तक नहीं पहुंच पा रहे हैं। योगीराज श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव हमें सन्देश व प्रेरणा दे रहा है कि आज संसार में अन्याय, अधर्म, पाप, अशांति, भ्रष्टाचार, अनैतिकता आदि तेजी से बढ़ी है। हमें धर्म पूर्वक आचरण करते हुए सत्य-न्याय, धर्म-मर्यादा आदि की रक्षा करनी चाहिए। मानवता के रास्ते पर चलना चाहिए। श्री कृष्ण का सम्पूर्ण जीवन हमें जीने की कला सिखाता है। महापुरुषों के जन्मदिन, पर्व, जयन्तियां आदि मनाने की तभी सार्थकता, सफलता और विशेषता है जब हम उनके जीवन चरित्र से प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को श्रेष्ठ, पवित्र, सार्थक व परोपकारी बना सके।

व्यंग्य

आया मौसम अंधविश्वास-पाखण्ड रूपी बाढ़ का

यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि रोजाना की अखबारों एवं दूरदर्शन की खबरों तथा विश्लेषण से यह जग-जाहिर है कि नारी-रूप में अथवा पुरुष रूप में आई वेद-विरुद्ध गुरुओं की बाढ़ ने भी हमारे देश में मिथ्यावाद, अन्धविश्वास रूपी तरह-तरह की पूजा आदि की आड़ में क्या-क्या पाप कर्म तथा बुराईयों के अनगिनत तोहफे हमें पेश किये हैं। ऐसी क्रोध, अन्याय एवं हिंसा रूपी कंकड़-पत्थर, सोने-चांदी के कण-रूप रेत से आशायुक्त एवं अहंकार-अभिमान तथा मद रूप पानी का उफान लिए इस गुरुओं की बाढ़ ने अपने-अपने घाट बना लिए हैं।

आज के युग में बाढ़ आने का सिलसिला जोरों पर है। पानी की बाढ़, भूकम्प की बाढ़, एड्स आदि नये-नये रोगों की बाढ़, मानसिक तनावों की बाढ़, नशाखोरी की बाढ़, भ्रष्टाचार, उग्रवाद, आतंकवाद, नारी अपमान की बाढ़, नित नये अपराधों की बाढ़, कृषि भूमि पर बनती होटल, मॉल, मल्टीस्टोरी बिल्डिंगों की बाढ़, बसन्त ऋतु में प्रतिवर्ष वृक्षों पर नवपल्लवित पुष्प आने के समान नये-नये नेता, पार्टियों एवं समाज सुधारकों, संस्थाओं की बाढ़, पॉप संगीत, अश्लील फिल्में एवं दूर-दूर्शन पर धारावाहिकों की बाढ़ अब और क्या कहें जैसे खरबूजा देखकर खरबूजा रंग बदलता है इसी प्रकार इन सब बाढ़ों को देखते हुए धर्म गुरुओं की भी भीषण बाढ़ आ गयी है। पिछले 68 बर्षों में गुरु-गद्दियों में से ही एक नदी से टूट-फूट कर निकली कई धाराओं के समान आई गुरुओं की बाढ़ सचमुच चौंकाने वाली है। इस बाढ़ में भारतीय सनातन वैदिक संस्कृति के बह जाने और उसके नामो-निशान मिट जाने का खतरा अपनी चरम सीमा पर है। भारतीय अनादि संस्कृति पर दृष्टि डालें तो वेदानुसार और योग शास्त्र सूत्र 1/26 के अनुसार भी **'स एषः पूर्वेषामपि गुरु'** अर्थात् जिस परमेश्वर से सृष्टि के आरम्भ में वेद ज्ञान उत्पन्न होता है, वही हमारा प्रथम गुरु है। उसके पश्चात् वेद के ज्ञाता, ऋषि-मुनि हमारे गुरु होते आये हैं और ऐसे महान कपिल मुनि, गुरु वशिष्ठ, व्यासमुनि आदि गुरुजनों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। इतिहास गवाह है कि अब महाभारत काल के पश्चात् अचानक वेद विरुद्ध गुरुओं की बाढ़ आ गयी है और यह सभी जानते हैं कि बाढ़ कोई भी हो, प्राणघातक ही होती है एवं समाज में सब तरफ बर्बादी के चिन्ह छोड़ जाती है जिसका पुनः उत्थान कठिन सा हो जाता है। विज्ञान तथा गणित आदि विषय किसी विशेष निश्चित् सूत्र का निर्माण करते हैं और उसी सूत्र पर आधारभूत होकर उन्नति करते हैं, परन्तु भीषण बाढ़ों का तो कोई दीन-ईमान अथवा निश्चित सूत्र ही नहीं होता। ये जिधर को मुंह करती है उधर ही अपना नया रास्ता बनाकर तबाही का मन्ज़र ही पेश करती जाती है यहां यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि रोजाना की अखबारों एवं दूरदर्शन की खबरों तथा विश्लेषण से यह जग-जाहिर है कि नारी-रूप में अथवा पुरुष रूप में आई वेद-विरुद्ध गुरुओं की बाढ़ ने भी हमारे देश में मिथ्यावाद, अन्धविश्वास रूपी तरह-तरह की पूजा आदि की आड़ में क्या-क्या पाप कर्म तथा बुराईयों के अनगिनत तोहफे हमें पेश किये हैं। ऐसी क्रोध, अन्याय एवं हिंसा रूपी कंकड़-पत्थर, सोने-चांदी के कण-रूप रेत से आशायुक्त एवं अहंकार-अभिमान तथा मद रूप पानी का उफान लिए इस गुरुओं की बाढ़ ने अपने-अपने घाट बना लिए हैं। जैसे जंगल में प्यासा मृग सरोवर ढूंढकर अपनी प्यास बुझा लेता है तथा अपनी प्राण रक्षा करके सन्तुष्ट होकर चला जाता है, इन बाढ़ निर्मित घाटों पर ऐसा कुछ नहीं होता। होता यह है कि यहां भी प्यासे मृग के समान जनता आध्यात्मिक ज्ञान से अपना दुःख समाप्त करने और कामना पूर्ति द्वारा तृप्त होने आती है परन्तु सनातन ज्ञान से अनभिज्ञ जनता बाढ़ की चपेट में आकर तथा कथित गुरुओं के क्रोध, अन्याय एवं हिंसा रूपी कंकड़-पत्थरों से चोट ग्रस्त होकर, रेत रूपी सोना-चांदी, धन आदि की आशा किये बैठे गुरुजनों को यूं ही अपनी मेहनत की कमाई को चढ़ावे में देकर, यू ही अपनी मेहनत की कमाई को बर्बाद करके, अहंकार-अभिमान एवं मद से भरे तथा कथित गुरुजनों के ढ़ोंग का शिकार तथा इस बाढ़ का शिकार होकर नर-नारी कभी-कभी तो अपना सब कुछ ही लुटा देते हैं। वर्तमान में यह देश में तथा कथित गुरुओं की आई भीषण बाढ़ है। क्या सरकार इस बाढ़ को रोक कर जनता को मिथ्यावाद, आडम्बर, अन्धविश्वास आदि मुसीबतों से बचाने का प्रयास करेगी अथवा इन गुरुओं की बाढ़ में हमारी अनादि सनातन वैदिक संस्कृति बह जाएगी।

-स्वामी राम स्वरूपजी,
योगाचार्य, कांगड़ा

Glimpses of the Rig Veda

The True and Dependable Friend

God is our eternal and the most dependable Friend. His help and support are unsurpassable in the day-to-day Struggle of our life. Our mortal friends having their own needs make friendship with others only to fulfill their wants. Since God has no such need or requirement whatsoever, His company is always selfless, pure and benevolent. He is the Merciful Friend to all beings for all times. His friendship is devoid of any pretension or illusion. It is pure, sublime and eternal.

"O God, You become a cow to him who aspires for a cow. You become a horse to him who aspires for a horse" – such a remarkable assertion in the verse appears very meaningful.

In our normal life, we utilize the one currency note to procure all forms of commodities. It can fetch clothes, eatables, house, automobile and all other necessities. But the currency of one Country is of no use in another country. However, there is one currency which is prevalent in all countries of the world. It is the golden currency. Most important of all, even that can never buy the internal wealth of man, like peace and bliss. It is the divine friendship alone which brings to us both the inner and outer happiness free of cost.

For gaining knowledge, we go to a teacher and for treatment of diseases we go to a doctor. The reason is they possess the learning which we do not have. But the Lord is the eternal storehouse of knowledge and wisdom. A true devotee, having made wholesome efforts, invokes Him to fulfil only his righteous needs.

दूणाशं सख्यं तव गौरसि वीर गव्यते।

अश्वो अश्वायते भव।। (Rv VI. 45.26)

Dunasam sakhyam tava gaur asi vira gsvyate.

asvo asvayate bhava..

To Him alone we can offer our devotion

"The sustainer Lord of the illuminant celestial cosmos has been present from the very beginning. He is the sole controller of all created beings. He only upholds this earth and heaven. Whom else, besides that bestower of happiness and prosperity can we offer all our devotion?"

"He is the giver of strength: spiritual and physical as well. He commands all beings. The enlightened ones obey Him. Under His shadow alone, one enjoys immortality as much as death. Whom else, besides that bestower of happiness, can we offer all our devotion?"

"By Him, the sky is made profound and the earth solid. By Him, the heaven and the solar sphere are fixed. He has set the shining region like the flying birds in the vast firmament. Whom else, besides that giver of happiness, can we offer all our devotion?"

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यातुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। (Rv x. 121.1)

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।

यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। (Rv x. 121.2)

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।

यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। (Rv x. 121.3)

Hiranyagarbhah sam avartatagre bhutasya jatah patih eka asit.

sa dadhara prthivim dyam utemam kasmai devaya havisa vidhema..

ya atmada balada yasya visva upasate prasisam yasya devah.

yasya chayamrtam yasya mrtyuh kasmai devaya havisa vidhema..

yena dyaur ugra prthivi ca drdha yena svah stabhitam yena nakah.

yo antarikshe rajaso vimanah kasmai devaya havisa vidhema..

The Divine Proclamation

"I am the eternal and principal Lord of all eternal treasure; I win over the entire wealth of everyone. All living beings call upon me as father; I bestow nourishment on the man who is devoted to me and dedicated to his duties."

"I inspire the sincere seeker to subdue his worldly temptations; so that he may ever follow me and earnestly keep himself engaged in benevolent deeds; I inspire the inner self of the seeker to bend and bow; I remove the hurdles of his path, humiliate his adversary and subjugate the obstructer in the interest of the seeker."

"Like a father, I bring the violent, the fierce and malignant forces under subjection for the welfare of the virtuous man as per his needs. I manifest myself to the worshipper, and thence give hum such gifts as may help him to conquer evils."

अहं भुवं वसुनः पूर्व्यस्पतिरहं धनानि सं जयामि शश्वतः।

मां हवन्ते पितरं न जन्तवोऽहं दाशुषे वि भजामि भोजनम्।। (Rv x. 48.1)

अहं वेशं नम्रमायवेऽकरमहं सव्याय पड्गृभिमरन्धयम्। (Rv x. 49.5)

अहं पितेव वेतसूंरभिष्टये तुग्रं कुत्साय स्मदिभं च रन्धयम्।

अहं भुवं यजमानस्य राजनि प्र यद्भरे तुजये न प्रियाधृषे।। (Rv x. 49.4)

Aham bhubam vasunah purvyas patir aham dhanani sam jayami sasvatah.

mam havanye pritaram na jantavo aham dasuse vi bhajami bhojanam..

Aham randhayam mrgayam srutarvane yan majihita vayuna cananusik.

aham vesam namram ayave' karam aham savyaya padhrbhim arandhayam..

Aham piteva vetasunr abhistaye tugram kutsaya smadibham ca randhayam.

aham bhuvam yajamanasya rajani pra yadbhare tujaye na priyadhrse..

आर्य समाज मंदिर, मल्हारगंज, इन्दौर में संगोष्ठी सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.) के तत्त्वावधान में ''आतंकवाद कारण और निवारण'' विषय पर गांधी हॉल में एक संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 2 अगस्त 2015 को किया गया। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता आर्य समाज के इस्लामिक और वैदिक धर्म के धर्मनिष्ठ गवेषक पं. महेन्द्र पाल आर्य(दिल्ली) थे। इस संगोष्ठी की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य ने की। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन तथा आचार्य चन्द्रमणि याज्ञिक द्वारा स्वस्ति वाचन मंत्री के साथ हुआ।

हजारों की संख्या में उपस्थित जनसमूह के बीच पं. महेन्द्र पाल जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि 'कुछ इस्लामिक संगठन धर्म के नाम पर लोगों को भड़काने का एवं आतंकवाद फैलाने का काम कर रहे हैं। ये देश व समाज के लिए अत्यन्त घातक है। आज सम्पूर्ण राष्ट्र चिंतित है कि इस घातक बीमारी के कैसे निज़ात पाएं।' पं. महेन्द्र पाल ने अपने सम्बोधन में आगे कहा कि 'कुरान व वेद के उपदेशों में जमीन आसमान का अन्तर है। जो हिंसा सिखाता हो, उपद्रव सिखाता हो वह धर्म नहीं हो सकता। कुरान की शिक्षा केवल मुसलमानों के लिए है किन्तु वेदों का उपदेश मानव मात्र के लिए है। जो मानव को अहिंसा, करुणा, प्रेम व संगच्छम का पाठ पढ़ाता है। यही सच्चा धर्म है। वेद की पवित्र शिक्षाओं को, विचारों को जब तक हम स्वीकार नहीं करेंगे तब तक आतंकवाद नहीं मिटेगा, *अन्यथा न तुम ही बचोगे, न साथी तुम्हारे। जब डूबेगी नौका तो डूबोगे सारे।।*'

कार्यक्रम में राज्य के विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं अन्य हिन्दू संगठनों के वरिष्ठ सदस्य-कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के मुख्य आयोजक डॉ. दक्षदेव गौड़, प्रधान श्री गोविन्द आर्य, श्री विनोद आहलुवालिया मंत्री, श्री रमेश चन्द्र गोयल, आचार्य संजय देव, वेद रत्न आर्य एवं मनोज सोनी अजयजी, सुरेशजी, श्री अखिलेश शर्मा एवं संदीप भालेराव इत्यादि थे। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अमर ग्रन्थ तथा वैदिक साहित्य आधे मूल्यों में प्रकाशित किया गया व शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। **-डॉ. विनोद आहलुवालिया, मंत्री**

गुरुकुल वैदिक आश्रम, वेदव्यास राउरकेला ओड़िशा के तत्त्वावधान में श्रावणी उपाकर्म यज्ञ एवं वेद प्रचार कार्यक्रम

गुरुकुल वैदिक आश्रम, वेदव्यास राउरकेला ओड़िशा के तत्त्वावधान में दिनांक 29 अगस्त से 4 सितम्बर 2015 तक श्रावणी उपाकर्म यज्ञ एव गुरुकुल वेद व्यास की ओर से विभिन्न ग्रामों में वेद प्रचार कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। **विनीत : आचार्य व पदाधिकारी**

ग्रन्थ परिचय

पंचमहायज्ञविधि

प्रश्न 1: इस पुस्तक में किस विषय का वर्णन किया गया है?

उत्तर : इस पुस्तक में प्रत्येक मनुष्य के लिए **नित्य प्रति करने योग्य आवश्यक कर्मों की विधि** बताई गई है।

प्रश्न 2: ये नित्य कर्म कौन-कौन से हैं?

उत्तर: ये नित्य कर्म है-1) **ब्रह्मयज्ञ** अर्थात् सन्ध्या, 2) **देवयज्ञ** (यज्ञ या हवन), 3) **पितृयज्ञ**, 4) **भूतयज्ञ** या बलिवैश्वदेव यज्ञ और 5) **नृयज्ञ** या **अतिथि यज्ञ**। इन्हीं का दूसरा नाम **'पंच महायज्ञ'** है।

प्रश्न 3: यह पुस्तक किस भाषा में लिखी गई है?

उत्तर: मूल **संस्कृत मंत्रों** के साथ उनके संस्कृत भाषा में भाष्य तथा **हिन्दी में भावार्थ** दिये गये हैं।

प्रश्न 4: इसकी रचना महर्षि ने कब की?

उत्तर : महर्षि ने **विक्रमी संवत् 1934, भाद्रपद मास की पूर्णिमा के दिन** इसका लेखन पूर्ण किया। यह संस्करण महर्षि द्वारा अंतिम बार संशोधित है। अत: यही सर्वाधिक प्रामाणिक है। इससे पूर्व वाले संस्करण नहीं।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।
- विजय आर्य, मो. 09540040339

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी द्वारा
श्रावणी पर्व व चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित दिनांक 20 से 23 अगस्त 2015 तक चले श्रीवणी पर्व एवं चतुर्वेद पारायण महायज्ञ धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह में बड़ी संख्या में स्त्री-पुरुष, युवाओं व बच्चों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। समारोह में वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने सोये हुए लोगों को अंदर तक जगाने का सार्थक प्रयास किया। दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक डॉ. महावीर मीमांसक ने गुरु शिष्य के विषय में अपने विचार रखे। महिला समाज की प्रधाना श्रीमती ऊषा कुकरेजा एवं उनकी सहयोगियों ने डॉ. महावीर मीमांसक को शाल भेंटकर सम्मानित किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान एवं आर्य समाज मंदिर, सी-3 जनकपुरी के प्रधान श्री शिव कुमार मदान ने समस्त पदाधिकारियों एवं महिला समाज को अपनी शुभकामनाएं दी।

समारोह में विशिष्ट अतिथि श्री कर्मवीर शेखर(निगम पार्षद), श्री यशपाल आर्य(निगम पार्षद), श्री योगेश अग्रवाल मुख्य ट्रस्टी श्री शक्ति कुमार अग्रवाल धर्मार्थ फिजियोथैरेपी ट्रस्ट को समाज के समस्त पदाधिकारियों द्वारा स्वागत किया गया। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के उपप्रधान श्री विक्रम नरुला का ने अपने आशीर्वचन दिये। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य की महत्वाकाक्षी योजना -दलित एवं बाल्मीक बस्तियों में जाकर यज्ञ करने एवं महर्षि दयानन्द के ज्ञान की ज्योति को समाज के अंतिम छोर तक पहुंचाने की परिकल्पना के कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी। रुड़की से पधारे श्री कल्याणदेव वेदी ने अपने भजनों से ऋषि के सिद्धान्तों को श्रोताओं तक पहुंचाया।

वेद प्रचार में आप भी बनें भागीदार

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वेद प्रचार व भजनोपदेशक मण्डल की नियुक्ति की गई है। भारत के समस्त आर्य समाज भजनोपदेश मण्डल को आमंत्रित कर महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने हेतु श्री एस.पी. सिंह जी से संपर्क करें। **संपर्क सूत्र:- 09540040324**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30=8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रेरक प्रसंग

टूटी खाट पर

गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरियाणा का वार्षिकोत्सव था। शास्त्रार्थ महारथी पण्डित शान्ति प्रकाश प्रात: भ्रमण से लौटे तो गुरुकुल के विशाल आंगन में एक टूटी खाट पर एक वृद्ध को लेटे देखा। खाट ऐसी कि बीच में बाण ही नहीं।

कोई बिस्तर भी नहीं, परन्तु वे पहचान गये कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं, यह तो सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान महाविद्वान् पण्डित गंगा प्रसाद जी उपाध्याय हैं। पण्डित शान्ति प्रकाशजी अविलम्ब अधिकारियों के पास गये और कहा कि वह देखो आर्य जाति के यशस्वी दार्शनिक पण्डित गंगा प्रसाद उपाध्याय एक टूटी खाट पर पड़े हुए हैं। प्रतीत होता है रात्रि को देर से पधारे हैं। अधिकारी गये और पण्डित गंगा प्रसाद जी को सम्मान से बुलाकर बिठाया। उनके जीवन की ऐसी कई प्रेरणाप्रद घटनाएं हमने उनके जीवन चरित्र 'व्यक्ति से व्यक्तित्व' में दी हैं। खेद है कि आर्यों में अपने बड़ों के चरित्र पढ़ने-पढ़ाने की उमंग ही नहीं रही।

साभार- तड़पवाले,
तड़पाती जिनकी कहानी

शोक समाचार

श्रीमती सुमित्रा देवी आर्या दिवंगत

श्रीमती सुमित्रा आर्या धर्मपत्नी स्व. श्री देवप्रिय आर्य सिद्धांत शास्त्री का 85 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 30 अगस्त 2015 को गुडगांव में वैदिक विधि-विधान से किया गया। विस्तृत जानकारी आर्य सन्देश के अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी।

आर्य समाज एल ब्लाक हरीनगर के उपमंत्री मास्टर सोहन लाल जी का निधन

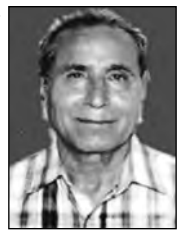

आर्य समाज एल ब्लाक हरीनगर, नई दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्ता व उपमंत्री मास्टर सोहन लाल जी का 71 वर्ष की अवस्था में दिनांक 4 अगस्त 2015 को अचानक निधन हो गया। वे अपने पीछे पूर्णत: सम्पन्न दो पुत्र श्री ललित एवं संजय व एक पुत्री उर्वशी को छोड़ गये हैं। मास्टर सोहन लालीजी की इच्छानुसार उनके परिवारीजनों ने मास्टरजी की अस्थियां गंगा में प्रवाहित न करके तपोवन देहरादून में गाढ़ कर वहां पर एक वृक्ष लगा दिया। आर्य समाज हरीनगर में मास्टर सोहनलाल जी की स्मृति में एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली के विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने अपनी-अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्य समाज सूरजमल विहार, दिल्ली के सदस्य श्री किशन चंद मुखीजा का निधन

आर्य समाज सूरजमल विहार, दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं सदस्य श्री किशन चंद मुखीजा का दिनांक 23 अगस्त 2015 को 67 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आर्य समाज दिलशाद गार्डन में दिनांक 25 अगस्त को श्री किशन चंद मुखीजा की स्मृति में शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल, आर्य केन्द्रीय सभा की उपप्रधान श्रीमती उषा किरण, श्री अभिमन्यु चावला, श्री रामपाल पांचाल एवं दिल्ली के विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने अपनी-अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्य समाज न्यू मोती नगर के सदस्य श्री मेहर सिंह आर्य को पुत्र शोक

आर्य समाज न्यू मोती नगर दिल्ली के सदस्य एवं आई ब्लाक कर्मपुरा नई दिल्ली निवासी श्री मेहर सिंह आर्य के पुत्र श्री विजेन्द्र आर्य का युवावस्था में ही अचानक निधन हो गया।

आर्य समाज मयूर विहार फेस-2 के सदस्य श्री जयपाल गर्ग का निधन

आर्य समाज मयूर विहार फेस-2 के सदस्य श्री जयपाल गर्ग का दिनांक 26 अगस्त 2015 को 63 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। आप अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी, तीन पुत्र श्री संजीव, श्री राजीव, श्री राहुल, पुत्री सुश्री श्वेता को सम्पन्नता के साथ छोड़ गये। जयपाल जी आर्य जगत के कर्मठ कार्य के साथ-साथ महादानी पुरुष के रूप में भी विख्यात थे। जयपाल जी की स्मृति में आर्य समाज मयूर विहार फेस-2 में एक शोक सभा का अयोजन किया गया जिसमें दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने उपस्थित होकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

31 अगस्त से 6 सितम्बर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 3 अगस्त/ 4 अगस्त, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 2 सितम्बर, 2015

स्वास्थ्य चर्चा

स्लिम-ट्रिम बनाना है शरीर तो करें खीरे का सेवन

वॉलीवुड के स्टार अपने आपको स्लीम ट्रीम बनाए रखने के लिए खीरे का भरपूर प्रयोग करते हैं। खीरा खाकर वजन कैसे घटाएं। आइए इसे जानें :- खीरे में 95 प्रतिशत पानी और 5 प्रतिशत फाईवर पाया जाता है। इसलिए यह शरीर में पानी की कमी को पूरा करने के साथ ही पाचन क्रिया को सही रखता है और नमक को भी बैलेन्स करता है। खीरे से शरीर में ठंडक रहती हैं और यह आंखों और त्वचा को भी लाभ पहुंचाता है।

अगर आप खीरे को अपनी डाइट में शामिल करना चाहते हैं तो इसका सलाद तैयार करें जिसमें दो खीरे, नमक, ऑलिव ऑयल की कुछ बूंदे तथा पत्तेदार सब्जियां मिला लें। इस सलाद को खाने से आपका वजन भी कम होता है और पेट भी भर जाता है।

चोकर ब्रैड (ब्राऊन ब्रैड) और जैम एक कटोरी खीरे की सलाद, एक गर्म चाय, दाल, रोटी और खीरे का सलाद इसे ब्रेक फास्ट में खाने से लाभ होता है।

डिनर में आपको केवल सलाद ही खाना चाहिए। अगर आप खीरे की सलाद तैयार करके लगातार खाएंगे तो आपका वजन कम होना शुरू हो जाता है और हमारी त्वचा में भी खास निखार आता है।

आवश्यकता है पोर्टल एवं इन्टरनेट विशेषज्ञ की

आवश्यकता है पोर्टल एवं इन्टरनेट विशेषज्ञ की जो आर्य समाज द्वारा संचालित पोर्टल की उपयोगिता और उसका विस्तार कर सकने में निपुण हो। आर्य समाजी विचारधारा वाले विशेषज्ञों को प्राथमिकता दी जाएगी। सम्पर्क करें: **श्री संदीप आर्य, मो. 09650183339**

प्रतिष्ठा में,

आर्य समाज टंकारा द्वारा प्रचार अभियान एवं सत्संग कार्यक्रम सम्पन्न

जून से अगस्त 2015 तक टंकारा ग्राम के विभिन्न एरिया में सायं 5 से 9.30 बजे तक परिवारी हवन सत्संग कार्यक्रम चलाया गया जिसमें भारी संख्या में महिलाओं व युवाओं ने भाग लिया। आर्य समाज भवन में आयोजित सत्संग जिसका विषय था 'अंध विश्वास, हवन का महत्व, आर्य समाज क्या है, ईश्वर और उसकी उपासना कैसे करें' में भी महिलाओं व युवाओं की भागीदारी सर्वाधिक रही। सम्पूर्ण कार्यक्रमों में आर्यवीर दल टंकारा के सदस्यों ने उपस्थित रहकर आयोजन को सफल बनाया। **-आर्यन वैदिक**

चुनाव समाचार

आर्य समाज नगीना, मेवात (हरियाणा)

प्रधान - **श्री रणवीरजी सोनी**

मंत्री - **श्री मानकचन्द सैनी**

कोषाध्यक्ष - **नरेश कुमार आर्य**

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज शहीदनगर, भुवनेश्वर-07

प्रधान - **स्वामी धर्मानन्द सरस्वती**

मंत्री - **श्री वीरेन्द्र कुमार पण्डा**

कोषाध्यक्ष - **श्री गोपाल दास रावल**

आर्य समाज केशवपुरम् दिल्ली-35

प्रधान - **श्री सत्यबीर पसरीचा**

मंत्री - **श्री मनबीर सिंह राणा**

कोषाध्यक्ष - **श्री प्रताप नारायण**

वधू चाहिए

हैदराबाद के हाईटेकसिटी में कार्यरत 34 वर्षीय विकलांग सीनियर साफ्टवेयर इंजीनियर को 24 से 28 वर्षीय कम से कम 10वीं तक शिक्षित, वैदिक संस्कृति-संस्कार युक्त, सौम्य तथा प्रशांत प्रवृत्ति युक्त एवं शुद्ध शाकाहारी, गरीब परिवार की या अनाथाश्रम में रहने वाली या कन्या गुरुकुल में पढ़ने वाली वधु चाहिए।जात-पात का कोई बन्धन नहीं। गुण-कर्म-स्वभाव को ही प्राथमिकता दी जाएगी। **सम्पर्क करें - मो. 08142772392, 09885667682**

आवश्यकता है ड्राईवर की

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को आवश्यकता है। एक अनुभवी, कुशल, आर्य समाजी विचारधारा के ड्राईवर की। जिसे दिल्ली की सड़कों का ज्ञान हो व दिल्ली से बाहर भी जा सके संपर्क करें।

श्री संदीप आर्य, मो. 09650183339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह